बाजारों में ग्रीन क्रैकर्स के नाम पर बिक रहे प्रदूषण फैलाने वाले पटाखे

पैकेट पर 'ग्रीन' का दावा, क्यूआर स्कैन किया तो नहीं मिली जानकारी

भास्कर संवाददाता | नागपुर

दिवाली पर प्रदूषण कम करने के लिए ग्रीन पटाखों की बिक्री पर जोर दिया जा रहा है। बाजार में भी दुकानदार ग्रीन पटाखे होने का दावा कर रहे हैं। लेकिन इन दावों की हकीकत कुछ और नजर आ रही है। पटाखों के पैकेट पर ग्रीन लिखा है। हरे रंग का लोगो भी है, लेकिन जब उनकी प्रमाणिकता जांचने के लिए क्यूआर कोड स्कैन किया गया तो अधिकांश मामलों में जानकारी ही नहीं मिली। इससे बाजार में बिक रहे ग्रीन पटाखों की वास्तविकता पर सवाल खड़े हो रहे हैं।

भास्कर रियलिटी चेक, प्रामाणिकता संदिग्ध

दैनिक भास्कर की टीम ने गांधीबाग, इतवारी और महाल सहित शहर के अलग-अलग पटाखा बाजारों में पहुंचकर रियलिटी चेक किया। गांधीबाग बाजार में दोपहर के समय भी ग्राहकों की भीड़ थी। टीम ने दुकानदारों से ग्रीन पटाखे दिखाने को कहा। कई तरह के पटाखे सामने रखे गए। कुछ पैकेट पर ग्रीन लिखा था तो कुछ पर हरे रंग का लोगो और क्यूआर कोड छपा हुआ था। लेकिन मोबाइल से क्यूआर कोड स्कैन करने पर अधिकांश उत्पादों की प्रमाणिकता और निर्माता से जुड़ी जानकारी नहीं मिल सकी।

आदेश के बाद भी निगरानी पर सवाल

महाराष्ट्र प्रदूषण नियंत्रण मंडल (एमपीसीबी), पुलिस और स्थानीय प्रशासन की जिम्मेदारी है कि पटाखों की बिक्री और निर्धारित नियमों का पालन सुनिश्चित करें। बावजूद इसके बाजार में प्रदूषण फैलाने वाले पटाखों की भरमार है। ऐसे में प्रशासन के रवैये पर सवाल उठ रहे हैं।



ग्रीन पटाखे क्या होते हैं?

ग्रीन पटाखे सामान्य पटाखों के मुकाबले कम प्रदूषण फैलाने के उद्देश्य से तैयार किए जाते हैं। इनके विकास में वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) और नागपुर स्थित राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (नीरी) की अहम भूमिका रही है। इनका उद्देश्य हवा में घुलने वाले बारीक कणों यानी पार्टिकुलेट मैटर के उत्सर्जन को कम करना है।

ऐसे करें असली ग्रीन पटाखे की पहचान

• पैकेट पर सीएसआईआर-नीरी का निर्धारित हरा लोगो देखें। • पैकेट पर दिया क्यूआर कोड स्कैन करें। • जरूरत पड़ने पर सीएसआईआर-नीरीग्रीन क्यूआर ऐप का इस्तेमाल करें। • स्कैन करने पर निर्माता, उत्पाद और प्रमाणन से जुड़ी जानकारी की जांच करें।